अध्याय : 14 जल

❍ **जल जीवन के लिए आवश्यक है ।**

❍**जल की आवश्यकताएँ :-** पीने , नहाने , खाना पकाना , कपड़े धोना आदि।

❍ **जल कहाँ से प्राप्त करते हैं :-** नदियों , झरनों , तालाबों , कुओं अथवा हैडपंप से जल प्राप्त करते हैं।

❍ **जल विलुप्त :-** जल, जलवाष्प में परिवर्तित होता रहता हैं। नदी , तालाब , झील , महासागर के सभी जल , निरंतर वाष्प में परिवर्तित होता रहता है।

❍ **सोडियम क्लोराइड :-** (नमक) महासागरों का खारा जल जो गहरे गड्ढो में छूट जाता है, वाष्पन के परिणामस्वरूप नमक के ढेर के रूप में एकत्र हो जाता है।

❍ **वाष्पीकरण :-** वायु में जल , वाष्पन (गर्म) तथा संघनन (ठंडा) परिवर्तित करने के प्रक्रम को **वाष्पीकरण** कहते हैं।

❍ **गिलास की बाहरी साथ पर जल की बूँदे :-** बर्फ़युक्त जल से भरे गिलास की बाहरी सतह , बाहर की हवा को ठंडा कर देती है और जलवाष्प गिलास की सतह पर संघनित हो जाती है।

❍ जैसे-जैसे हम पृथ्वी के पृष्ठ से ऊपर जाते हैं **, ताप कम हो जाता है।**

❍ जैसे-जैसे वायु ऊपर उठती जाती है , ठंडी होती जाती है।

❍ **जलकणिका :-** पर्याप्त ऊँचाई पर वायु इतनी ठंडी हो जाती कि इसमें उपस्थित जलवाष्प संघनित होकर छोटी-छोटी जल की बूँदों , जिन्हें **जलकणिका** कहते हैं ।

❍ **बादल :-** बादल ये छोटी जलकणिकाएँ , जो वायु में तैरती रहती हैं , जो हमें बादलों के रूप में दिखाई देती है।

❍ **वर्षा :-** बहुत -सी जलकणिकाएँ आपस एक बड़े आमाप की जल की बूँदे बनाती है। ये जल की बूँदे भारी होने पर वर्षा के रूप धरती पर गिरता है।

❍ **संघनन :-** जलवाष्प को जल में परिवर्तन करने के प्रक्रम को संघनन कहते हैं।

❍ **भौम-जल :-** पृथ्वी का शूद्ध जल भौम-जल के रूप में उपलब्ध है।

❍ **जलचक्र :-** महासागरों तथा जलीय भागों के बीच जल के चक्रण को जलचक्र कहते है।

❍ **बाढ़ :-** अत्यधिक वर्षा बाढ़ का कारण बन सकता हैं।

❍ **सूखा :-** वर्षा न होना अथवा भौम-जल की कमी से सूखा पड़ सकता है।

❍ **जल संरक्षण :-** जल का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए और सावधनी बरतें , जिससे जल व्यर्थ न हो ।

https://www.evidyarthi.in

❍ वर्षा के जल का संग्रहण

❍ वर्षा के पानी का बाद में उत्पादक कामों में इस्तेमाल के लिए इकट्ठा करने को वर्षा जल संग्रहण कहा जाता है।

❍ आपकी छत पर गिर रहे बारिश के पानी को सामान्य तरीके से इकट्ठा कर उसे शुद्ध बनाने का काम वर्षा जल का संग्रहण कहलाता है।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in